Impact Factor-8.632 (SJIF) ISSN-2278-9308

# B.Aadhar

Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

March-23

(CCCXCVIIII) 399

## स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

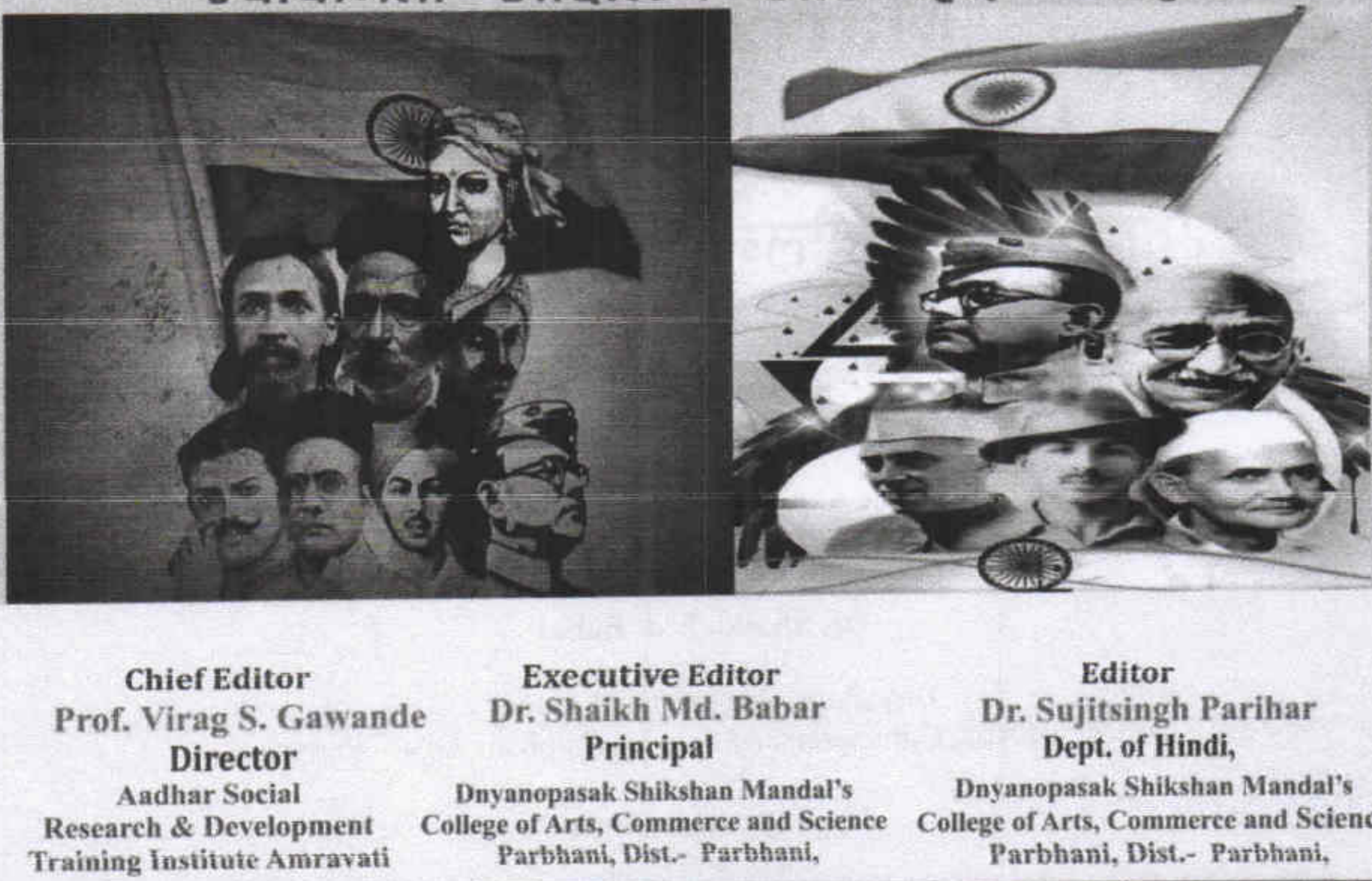

**Chief Editor**
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

**Executive Editor**
Dr. Shaikh Md. Babar
Principal
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

**Editor**
Dr. Sujitsingh Parihar
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science
Parbhani, Dist.- Parbhani,

This Journal is indexed in :
- Scientific Journal Impact Factor (SJIF)
- Cosmos Impact Factor (CIF)
- International Impact Factor Services (IIFS)

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

For Details Visit To : www.aadharsocial.com

Aadhar Publications

Impact Factor – (SJIF) –8.632 ISSN – 2278-9308

# B.Aadhar

## Single Blind Peer-Reviewed & Refereed Indexed

### Multidisciplinary International Research Journal

# March -2023

**ISSUE No- (CCCXCVIIII) 399**

# स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी साहित्य

Chief Editor
**Prof. Virag.S.Gawande**
Director
Aadhar Social Research &, Development Training Institute, Amravati.

Executive-Editor
**Dr. Shaikh Md. Babar**
Principal,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,

Editor
**Dr. Sujitsingh Parihar**
Dept. of Hindi,
Dnyanopasak Shikshan Mandal's
College of Arts, Commerce and Science Parbhani, Dist.- Parbhani,

## Aadhar International Publication

For Details Visit To : www.aadharsocial.com
© All rights reserved with the authors & publisher

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna Estd. 1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

**B.Aadhar'** International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | ISSN : 2278-9308
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO, (CCCXCVIII) 399-A | March , 2023

## INDEX-A


| No. | Title of the Paper | Authors' Name | Page No. |
|---|---|---|---|
| 1 | स्वाधीनता आन्दोलन में लोकप्रिय प्रतिनिधि कहानियों की भूमिका- | डॉ.सुनील गुलाबसिंग जाधव | 1 |
| 2 | स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी काव्य का योगदान | प्रो. डॉ. शेषराव लिंबाजी राठोड | 5 |
| 3 | द्विवेदी युगीन काव्य में राष्ट्रीय चेतना | डॉ.शिवसर्जन होनाजी टाले | 8 |
| 4 | स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी कविता | प्रा डॉ विश्वनाथ किशन भालेराव | 11 |
| 5 | स्वाधीनता आंदोलन और बालकृष्ण शर्मा "नवीन" का काव्य | प्रा. डॉ. शहाजी बाला चव्हाण | 14 |
| 6 | स्वाधीनता आंदोलन में लोकसाहित्य का योगदान | डॉ. शेख शहनाज अहेमद | 18 |
| 7 | भारतीय स्वाधीनता आंदोलन और हिंदी काव्य | प्रा संतोष विजय येरावार | 23 |
| 8 | हिंदी की पत्रकारिता में पं. माखनलाल चतुर्वेदी का योगदान | प्रा. डॉ. मोहन मुंजाभाऊ डमरे | 29 |
| 9 | भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और छत्रपति शिवाजी (आधुनिक हिंदी काव्य के संदर्भ में) | प्रा. डॉ. नरसिंगदास ओमप्रकाशजी बंग | 33 |
| 10 | स्वाधीनता आंदोलन और मैथिलीशरण गुप्त का काव्य | प्रा.येळणे देविदास गणेशराव | 37 |
| 11 | स्वाधीनता का यज्ञ भारतेंदु युगीन काव्य | डॉ. विजय शिवराम पवार | 40 |
| 12 | जयशंकर प्रसाद के 'स्कंदगुप्त' नाटक में राष्ट्रीय चेतना | डॉ. कल्याण शिवाजीराव पाटील | 45 |
| 13 | स्वाधीनता आंदोलन और सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य | डॉ. देविदास भिमराव जाधव | 50 |
| 14 | स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी साहित्यकारों का योगदान | डॉ. सुरेश कुमार | 54 |
| 15 | स्वाधिनता आंदोलन और हिंदी साहित्य | डॉ. रज़िया शहेनाज़ शेख अब्दुल्ला | 59 |
| 16 | स्वाधीनता संग्राम में महिलाओं का योगदान | डॉ. संगीता पांडुरंग लोमटे | 63 |
| 17 | हिंदी साहित्य और हिंदी सिनेमा | डॉ.संगीता श. उप्पे | 66 |
| 18 | स्वाधिनता आंदोलन में हिंदी कवियों का योगदान | प्रा. डॉ. बालिका रामराव कांबले | 69 |
| 19 | विभिन्न हिन्दी उपन्यास और भार[illegible] | शेख[illegible] , डॉ. दस्तगीर एस.देशमुख | 72 |


Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

**B.Aadhar'** International Peer-Reviewed Indexed Research Journal | ISSN : 2278-9308
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIIII) 399-A | March , 2023

# स्वाधीनता का यज्ञ भारतेंदु युगीन काव्य

डॉ. विजय शिवराम पवार
हिंदी विभाग श्री गुरु बुद्धिस्वामी महाविद्यालय, पूर्णा (जं)
मोबाइल : ९४२०३९३९३१

हिंदी साहित्य में आधुनिक काल को भारतेंदु युग के नाम से जाना जाता है। रीतिकालीन सामंती आदर्श जर्जरित होते जा रहे थे तथा हिंदी साहित्य में नवोत्थानारंभ हो चुका था। वैज्ञानिक साधनों-रेल, तार, मुद्रण यंत्र आदि के द्वारा समाज में नया परिवर्तन दृष्टिगोचर होने लगा था। सन 1857 का विप्लव भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटना रही। यद्यपि हिंदी साहित्य में इस संघर्ष का अधिक उल्लेख नही मिलता। लेकिन लोकभाषाओं में देश की स्वतंत्रता को प्राप्त करनेवाले वीर पुरुषों के शौर्य पूर्ण युध्द की सुंदर तथा मार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है। इन लोक-गीतों में विदेशी राज्य के प्रति घृणा तथा उपेक्षा का भाव व्यंजित हुआ, जिससे देश के जनमानस की चेतना और देशप्रेम की भावना का अनुमान लगाया जा सकता है। इस साहित्य में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के उग्र रुप की झाँकी दिखाई देती है। जिससे आनेवाले कई वर्षों तक ब्रिटिश शासन से संघर्षरत रहने की प्रेरणा और शक्ति मिलती रही। जिस कविता में देश को जागृत करने का सामर्थ्य होता है, वह कविता राष्ट्रीय चेतना की कविता कहलाती है। राष्ट्रीय चेतना के काव्य में देश की त्रुटियों का वर्णन निसंकोच रुप से किया जाता है। देश के दु:खद् एवं सुखद् घटनाओं के साथ कवि के प्राण क्लेशित और रोमांचित होते रहते हैं। उसके हृदय की स्थिति देश के उत्थान-पतन के साथ उठती-गिरती रहती है।

भारतेंदु युगीन काव्य में राष्ट्रीयता का जो प्रभावी रुप मिलता है, वह भारतीय साहित्य की प्राचीन परंपरा की देन है। वैदिक और संस्कृत भाषा में ईश्वर की परमसत्ता को स्वीकार करते हुए मानव कल्याण की कामना की गई है। इसके तहत हम कह सकते हैं कि, राष्ट्रीयता का मूल भी हमारा वैदिक तत्व और मानवीय तत्व रहा है। भारतेंदु युगीन धरातल पर राष्ट्रीयता को नूतन रुप मिला है। भारतीय स्वतंत्रता के राष्ट्रीय आंदोलन से हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता का भावप्रवण रुप विकसित हुआ है। देश की संस्कृति, सभ्यता भाषा, परंपरा और आदर्श आदि की अनूठी एकता आधारभूमि पर देशवासियों में एकानुभूतियों का उन्मेष हुआ है। युगीन कवियों ने अतीत की गौरवशाली गाथा को प्रस्तुत करते हुए 'स्वाभिमान' और 'राष्ट्रीयता' को उद्दीप्त किया है। हिंदी साहित्य के इस नवीन विशदपूर्ण और विविध विषय संपन्न स्वरुप के निर्माण का श्रीगणेश दो सभ्यताओं के सांस्कृतिक संपर्क के फलस्वरुप 19 वी शती के उत्तरार्ध में हुआ था। भारतीय सभ्यता शताब्दियों के बोझ से स्थिर हो चुकी थी। इसी समय वह एक यंत्रसज्ज विजेता देश के संपर्क में आ गई। अंग्रेज लोग यांत्रिक, औद्योगिक सभ्यता के अग्रदूत तथा नवीन ऐतिहासिक शक्ति के प्रतिनिधि होने के कारण प्रभावपूर्ण बन गए थे। इस पाश्चात्य संपर्क के परिणाम स्वरुप ही भारत में राष्ट्रीयता का उदय हुआ। इसमें सजीवता उत्पन्न हुई और राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का विकास हुआ। इस युग की राष्ट्रीयता के संदर्भ में सन 1857 का वर्ष महत्वपूर्ण घटना के रुप में सामने आया है। इस समय स्वतंत्रता संग्राम के माध्यम से अंग्रेजी शासन को समाप्त करने का प्रयत्न किया गया किंतु ऐसा नही हो सका। भारतीय जनमानस में उभरा विद्रोह स्वतंत्रता का अभिलाषी था। इस आंदोलन से राष्ट्रीयता का मुखर स्वर सामने आया है। युगीन कवियों ने समाज सुधार के साथ अतीत का गौरवगान करते हुए भारतीयों में आत्मसम्मान और स्वाभिमान का भाव जगाया। युगीन कवियों ने सामंतवाद को जड़ से उखाड़ने का प्रयत्न किया था। क्योंकि सामंतवाद ने भारतीय समाज व्यवस्था में रुढ़ियों,

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

अंधविश्वास, शोषण और जड़ता भर दी थी। इन्ही कारणों से हमारा देश गुलाम हुआ था। अत: राजनीतिक स्तर पर अगर समाज को उपनिवेशवाद से लड़ना हो तो अपने जड़ समाज को गतिशील और जागरुक बनाना जरुरी था। यह विचारधारा युगीन कवियों के सोच का केंद्रबिंदु था। कवि भारतेंदु ने स्वदेशी का नारा लगाया तथा हिंदी साहित्य में स्वदेशी आंदोलन के प्रथम प्रवर्तक के रूप में जाने गए। भारतेंदु ने स्वयं ही राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत कविताएँ लिखी और अपने मंडल के अन्य कवियों को भी राष्ट्रप्रेम का पाठ पढ़ाकर उन्हे राष्ट्रीयता से प्रेरित किया। इन्होंने युगीन परिवेश के परिप्रेक्ष्य में राष्ट्रप्रेम, गौरवपूर्ण अतीत, स्वभाषा, स्वदेशी आंदोलन, बुराईयों का खंडन, सुधारभावना, अंग्रजों द्वारा राज्य की लूट, आपसी फूट, भ्रष्टाचार, कृषकों की दुर्दशा, अकाल पीडितों एवं सुखाग्रस्तों की व्यथा आदि विषयों पर लिखा है। इस काल के कवियों ने कविता को समाज सुधार की दृष्टि से उपयुक्त समझा है।

भारतेंदु युग में राष्ट्रीयता को नया रुप मिला है। इस समय देश अंग्रेजी शासन की निर्दयता-कठोरता से प्रबल रुप में प्रभावित हो चुका था। देश की राष्ट्रीयता के संदर्भ में सन 1857 का आंदोलन महत्वपूर्ण घटना के रुप में सामने आया है। भले ही यह आंदोलन असफल रहा हो लेकिन इसका दूरगामी परिणाम यह हुआ कि, इस आंदोलन से राष्ट्रीयता का स्वर सामने आया। तद्‌युगीन कवियों ने समाज सुधार के साथ अतीत का गौरवगान करते हुए भारतीयों में आत्मसम्मान और स्वाभिमान का भाव जगाया है। सामाजिक, सांस्कृतिक उन्नयन की आशाओं एवं स्वतंत्रता आंदोलन की छाया में विकसित भारतेंदु युगीन काव्य नव सांस्कृतिक राष्ट्रीयता के साथ विकसित हुआ है। यह निर्विवाद तथ्य है कि, अंग्रेजी शासन में व्यवसाय, उद्योग और आधुनिक सुविधाओं से देश को विकसित होने का अवसर मिलता था। किंतु परतंत्रता के परिवेश में भारतीयों को घुटन और संत्रास ही मिला। इसको पार करने के संदर्भ से राष्ट्रीयता मुखरित हुई है। कवि अंग्रेजी शासक पर तीखा और कटू व्यंग्य करते हुए सामने आते हैं-

"भीतर भीतर सब रस चूसै, हँसि हँसि के तन-मन-धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि साजन नहीं अंग्रेज॥"१

सहृदय साहित्यकार देश को दासता की जंजीर से मुक्त कराने के लिए अंग्रेजी शासन का विरोध करता हुआ जन-मानस को उद्बोधित करता हुआ दिखाई देता है-

"चुरन साहब लोग जो खाता, सारा हिंद हजम कर जाता।
चूरन पुलिसवाले खाते, सब कानून हजम कर जाते॥"२

कवियों ने अंग्रेजी शासन के फूट और बैर के भाव को समाज से नष्ट करने के लिए नव-जागरण का संदेश दिया है। स्वदेशी वस्तुओं के प्रति अनुराग जगाते हुए बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' ने लिखा है-

"ज्यों-ज्यों चरखा चलत।
बैर फूट बढ़ाय भारत वासिनै जे छलत।
प्रेमघन तिन मिलन लखि उनको हियो खलभलात॥"३

स्वाधीनता आंदोलन में हिंदी भाषा की विशेष भूमिका रही है। दूसरे शब्दों में कहे तो स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा ही हिंदी थी। जो पूरे देशवासियों को एक सूत्र में बाँध रही थी। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी भाषा प्रेम को मनोरम अभिव्यक्ति प्रदान की है-

"निज भाषा उन्नति अहैं सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल॥"४

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Shri Guru Buddhiswami Shikshan Prasarak Sanstha's Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn) Estd. 1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

उत्तर से दक्षिण, पूर्व से पश्चिम तक भारत की भौगोलिक एकता की तुष्टि करनेवाले सुविख्यात नगरों-काशी, अयोध्या, प्रतिष्ठानपुर, इंद्रप्रस्थ, मथुरा, द्वारिका, चित्तौड़, पाटलिपुत्र की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए इनके पतन या विनाश पर कवि शोक प्रकट करता है-

"नही वह काशी रह गयी, हती हेममय जौन।
नहि चौरासी कोस की, रही अयोध्या तौन॥
राजधानी जो जगत की, रही कभौ सुख साज।
सो बिगहा दस बीस में सिकुडी सी जनुआज॥"५

बालमुकुंद गुप्तजी का मत है कि अतीत की गरिमा का वर्णन करके वर्तमान की दयनीय दशा के कारणों की पोल खोलकर उसे बदलने के लिए संघर्ष करना है। कवि ने प्राचीन काल के लोगों की वीरता की भावना, उनके अद्भुत शौर्य एवं पराक्रम को कुछ इस प्रकार कलमबध्द किया है-

"जिनके क्षत्रन पर रही तरिवारन करि छांह।
अभय सबन को करत ही जिनकी लंबी बांह॥
जिनके करसों मरन लौं छुटयो न कठिन कृपान।
तिनके सुत प्रभु पेट हित भये दास दरवान॥"६

इस अत्याचार से भारत को बचाने तथा भारतीयों में व्याप्त आलस्य को दूर कर उन्हे कर्मरत बनाने की प्रार्थना करते हुए कवि भगवान को जगाने की चेष्टा भी करता है-

"डूबत भारत नाथ बेगि जागो अब जागो।
\+ + + +
जागो बली बेगहि नाथ अब देहु दीन हिंदुन सरभ॥17॥"७

वास्तव में भारतेंदु किसी भी भाषा के विरोधी नही थे। वे मातृभाषा को महत्वपूर्ण स्थान दिलाने के हक में थे। युगीन काव्य में इन्होने अंग्रेजी, संस्कृत, फारसी आदि भाषाओं की श्रेष्ठता और उपयोगिता पर भी प्रकाश डाला है। वे कहते हैं कि अंग्रेजी अत्यंत समृध्द भाषा है क्योंकि उसमें अनूदित साहित्य की भरमार है। अंग्रेज सब जगह से अपने काम की सामग्री अनुवाद के द्वारा ही जुटाते हैं। अत: हिंदी साहित्य भांडार को भी इसी प्रकार समृध्द करना चाहिए-

"तासों सब होहि घर विद्या बुध्दि निधान।
होइ सकत उन्नति तबै और उपाय न आन॥30॥"८

बालमुकुंद गुप्तजी के हृदय में सामंतो के प्रति कोई सहानुभूति नही थी, क्योंकि वे किसानों, मजदूरों तथा दलित वर्ग के लोगों का शोषण करते थे। उनकी सहानुभूति तो उस किसान के साथ थी जो स्वयं भूखा रहकर दूसरों का पेट भरता है। कवि अंग्रेजी सरकार के चापलूस सर सैय्यद अहमद जैसे सामंत को संबोधित करते हुए लिखते हैं-

"जिनके कारण सब सुख पावैं, जिसका बोया सब जग खावैं,
हाय हाय उनके बालक नित भूखों के मारे चिल्लावैं,
हाय जो सबको गेहूँ देते वह ज्वार बाजरा खाते हैं,
वह भी जब नहिं मिलता तब वृक्षों की छाल चबाते हैं।"९

कवि ने अपनी बैर और फूट के [illegible] डालते हुए कहते हैं कि, फूट से कौरवों का नाश हुआ, लंका पुरी ध्वस्त [illegible] रहना पड़ा इसलिए बैर त्यागकर मातृ-भाव ग्रहण करने को [illegible]

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
Estd.1983
PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

**B.Aadhar** International Peer-Reviewed Indexed Research Journal
Impact Factor -(SJIF) -8.632, Issue NO (CCCXCVIIII) 399-A
ISSN : 2278-9308
March , 2023

"फूट बैर दूरि करि बाँधि कमर मजबूत।
भारत माता के बनो भ्राता पूत सपूत॥81॥"१०

युगीन कवि ने भारत के सभी जाति, संप्रदाय, धर्म, पंथ, भाषाओं और प्रांतो में सच्चा मेल चाहते थे। ये एक ओर फूट, बैर, मत्सर, द्वेष और कलह का निषेध करते हैं, तो दूसरी ओर एकता का प्रचार करते हुए दिखाई देते हैं। हिंदू-मुस्लिम बैर यह भारतीय एकता को खंडित करनेवाली सबसे बड़ी बाधा है। जितना लहू धर्म के नाम पर हिंदू-मुस्लिम ने बहाया है, उतना शायद ही किसी अन्य संघर्ष में बहाया हो। ऐसी घटनाओं को देखकर युगीन कवियों को बहुत दु:ख हुआ। इसी कारण इनमें एकता स्थापित करने की दृष्टि से कवियों द्वारा हिंदू-मुस्लिम भारत माता की दो आँखे तथा राम-रहीम कहकर एक होने का संदेश दिया। इन कवियों ने एकता की आवश्यकता पर बल देते हुए इसमें बाधा पहुँचानेवाले तत्वों का यथार्थ चित्रण किया है। आज एकता जाति, धर्म, पंथ एवं प्रांत आदि के वजह से खंडित होते दिखाई दे रही है। युगीन कवियों ने ऐसे विघटन के समय स्वातंत्र्यपूर्व काल में दिया हुआ जातीय एकता का संदेश अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसलिए हम कह सकते हैं कि, एकता का तत्व अपनाएँ बिना राष्ट्रोन्नति असंभव है।

युगीन हिंदी काव्य में देश की तत्कालीन विषम रानीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों के प्रति गहरी व्यथा प्रकट की गई है। अंग्रेजों की दमन और शोषण की नीति से देश का मार्ग अंधकार से आच्छादित हो गया था। कवियों ने निराशा के वातावरण में आशा का संचार करने का सराहनीय प्रयास किया है। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने 'भारत दुर्दशा' में भारत के अतीत का गौरवगान करते हुए अंग्रजों के दुष्कृत्य पर उँगली उठाई है-

"सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो।
सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो॥
सबके पहिले जो रुप रंग-भीनो।
सबके पहिले विद्याफल जिन गहि लीनो॥
अब सबके पीछे सोई परत लखाई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥

\+ + + +

अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी।
पै धन विदेश चलि जात इहै अति ख्वारी॥

\+ + + +

सबके ऊपर टिक्कस की आफत आई।
हा! हा! भारत दुर्दशा न देखी जाई॥"११

युगीन कवियों की यह कामना रही है कि, भारतीयों को पराधीनता की शृंखला से मुक्त करने तथा राष्ट्र के प्रति प्रेम जागृत करना। जनता में निजत्व की भावना जागृत कर स्वदेश निर्मित वस्तुओं का प्रयोग एवं निज भाषा के प्रति अनुराग उत्पन्न करके राष्ट्रीयता को जगाने का प्रयास किया है। स्पष्ट है कि युगीन काव्य तत्कालीन परिवेश में जीवन के नए मूल्यों को लेकर अवतरित हुआ है।

अंतत: भारत के राजनीतिक, सामाजिक और नैतिक क्षितिज पर होनेवाले युगांतकारी महापरिवर्तन के अरुणोदय की सूचना बनकर भारतेंदु युगीन काव्य सामने आया। इन कवियों ने अपनी प्राचीन घिसा-पिटी परिपाटी को छोड़ अतीत का गौरवगान, राष्ट्रभक्ति, सामाजिक चेतना और राष्ट्रीयता का अपने नए ढंग से प्रवर्तन किया है। युगीन काव्य के सिंहावलोकन से भारतीय समाज प्रथम बार अपने [illegible]य में जागरुक हुआ। अत: आधुनिक

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya Purna (Jn.) Estd. 1983
PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani

काव्य के वर्तमान रुप को प्रस्तुत करने में विषेश योगदान रहा है तथा राष्ट्रीयता को जगाने में इस युग की कविता का महान योगदान रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. मदन गोपाल- भारतेंदु हरिश्चंद्र, राजपाल एँन्ड सन्स, कश्मीरी गेट दिल्ली, प्रथम सं. 1976 ई.
2. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय- आधुनिक हिंदी साहित्य, हिंदी परिषद, इलाहाबाद, तृतीय सं. एवं परिवर्धित संस्करण अप्रैल 1954 ई.
3. डॉ. बरसानेलाल चतुर्वेदी, प्रभावत प्रकाशन, दिल्ली-6, प्रथम सं. 1973 ई.
4. डॉ. रामचंद्र मिश्र- भारतेंदु साहित्य, विश्वभारती प्रकाशन, धनवटे चेंबर्स, नागपुर सीताबर्डी, प्रथम सं. मई 1970.
5. डॉ. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय- भारतेंदु हरिश्चंद्र, साहित्य भवन प्रा. लि. इलाहाबाद, तृतीय सं. 1965 ई.
6. डॉ. चंद्रभानु सोनवणे- भारतेंदु के विचार एक पुनर्विचार, पंचशील प्रकाशन, फिल्म कॉलोनी, चौड़ा रास्ता, जयपुर 3, प्रथम सं. 1962 ई.
7. डॉ. कमला कानोडिया- भारतेंदु कालीन हिंदी साहित्य की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, विश्वविध्याल प्रकाशन विशालक्षी चौक, वाराणसी, प्रथम सं. 1971 ई.
8. श्री. नारायण पांडेय- भारतेंदु हरिश्चंद्र: नए संदर्भ की तलाश, प्रकाशक शब्द भारती, 84 ओल्ड लष्कर लाइन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1988 ई.
9. पं. बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन- प्रेमघन सर्वस्व खंड 2
10. बालमुकुंद गुप्त- स्फूट कविताएँ
11. ओमप्रकाश सिंह- भारतेंदु हरिश्चंद्र ग्रथावली, भाग-1, पृ. 113, 114.

Co-ordinator
IQAC
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn) Dist. Parbhani - 431511 (M.S.)

Estd. 1983

PRINCIPAL
Shri Guru Buddhiswami Mahavidyalaya
Purna (Jn.) Dist.Parbhani